ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगाा

संकाय— मानविकी

विषय— हिन्दी

पी.एच.डी. शोधकार्य का प्रस्तावित प्रारूप

शोध—शीर्षक

डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह की काव्य—चेतना

13.04.2024

Dr. Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

शोधनिर्देशक
डॉ0 कृष्ण कुमार पासवान
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
आर.सी.एस. कॉलेज, मंझौल
बेगूसराय

राहुल कुमार

शोधार्थी
राहुल कुमार
पैट— 2021—2022
पैट क्रमांक— 22090366
पता
ग्राम— बाघी
पोस्ट— सुहिर्दनगर
थाना— नगर थाना
जिला— बेगूसराय
पिन कोड— 851218

प्रस्तावित शोध–प्रारूप

1. शोध–शीर्षक :– डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह की काव्य–चेतना

2. प्रस्तावना

डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह सामयिक हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनके काव्य का विषय बहुविध है। उन्होंने वर्तमान की स्थितियों एवं विसंगतियों का बड़ा ही प्रभावशाली अंकन किया है। एक ओर उनमें सामाजिक चेतना मुखर है तो राष्ट्रीय एवं राजनीतिक चेतना का भाव भी पूरे ओजस्वी एवं यथार्थ रूप में अभिव्यक्त है। उन्होंने विषम आर्थिक स्थितियों को अपनी कविता का विषय बनाया है तो दूसरी ओर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय जनमानस की स्थितियाँ भी वास्तविक रूप में चित्रित हैं। धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप पर भी डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह का प्रभावी लेखन है।

3. प्रस्तावित शोध–विषय की आवश्यकता एवं महत्ता

डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह विरचित 'आत्मा के शिल्पी' में प्रसिद्ध समाजवादी शब्दशिल्पी साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी के जीवन–संघर्ष को निरूपित किया गया है तो दूसरी ओर इसमें वैश्विक चेतना के स्तर पर गाँधीवाद, मार्क्सवाद, बौद्ध–दर्शन, भारतीय जीवन–दर्शन, अस्तित्ववाद तथा मानववाद के साथ विश्व युद्ध की विभीषिका आदि व्यापक संदर्भ एवं विषय उभर कर सामने आये हैं। 'मैं भूखा हूँ' में आपातकाल की अभिव्यक्ति बेवाक ढंग से की गई है। प्रतिबंधित जीवन कैसे मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास की धारा को अवरूद्ध करता है, इसे पूरी संजीदगी के साथ अभिव्यक्त किया गया है। विसंगत सामाजिक सिथतियों, राजनीतिक स्वार्थपरता, वैयक्तिक कुंठा, अभाव एवं विवशता इस रचना के केन्द्र में है। आपातकाल से जैसे वर्तमान समय भी मुक्त नहीं है, जहाँ कई स्तरों पर सख्त प्रतिबंधों का दौर जारी है। 'मेरा घर कहाँ है?' जीवन मूल्यों को तलाशती कविताओं का संग्रह है। वर्तमान विश्व की स्थितियों के संदर्भ में व्यक्ति का अस्तित्व किस तरह संकटग्रस्त है, वैश्वीकरण और बाजारवाद के दौर में व्यक्ति की पहचान कहाँ खो गई है, इसे अत्यंत सहज एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बाजारवाद ने मानव को संत्रास, घुटन, अंतर्द्वन्द्व, प्रतिस्पर्धा, भाग–दौड़, प्रदर्शन, भौतिक चकाचौंध तथा जीवन की अस्थिरता की ओर ढकेल दिया है। इन वैषम्यपूर्ण स्थितियों का बखूबी चित्रण इस काव्यकृति की अन्यतम विशेषता है। युगीन सच्चाई को उभारती रचना है 'महासमर जारी है'। इस काव्य में वर्तमान की समस्याएँ हैं तो समाधान भी है। वस्तुतः महासमर सिर्फ बाहय स्तर पर ही जारी नहीं है, अपितु अंतः करण के स्तर पर भी

व्यक्ति भीषण महायुद्ध का शिकार है। मानवजाति के अंतर और बाह्य संघर्ष की महागाथा है यह कृति।

शोककाव्य की दृष्टि से विलक्षण कृति है 'तुम कहाँ हो?'। कवि के अन्तर्मन की, उसकी अन्तर्दशाओं की अभिव्यक्ति अत्यंत सहज एवं स्वाभाविक रूप में हुई है। अन्तरंग अनुभूतियों के संस्पर्श ने काव्यकृति को अप्रतिम बना दिया है। कवि की संचित मर्मस्पर्शी संवेदनाएँ पूरी आत्मीयता के साथ उभर कर सामने आयी हैं। भारतीय किसानों की पीड़ा को, उनके दुःख–दर्द एवं कटु अनुभवों को सम्यक् ढंग से आजतक समझा नहीं गया, जबकि कृषि–प्रधान देश माने जाने वाले भारत देश में आज भी किसानों की बदतर सिथति कायम है, जिसकी यथार्थपूर्ण अभिव्यक्ति 'कृषक वेदना' में है।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि डा0 राजेश्वर प्रसाद सिंह की कविताएँ व्यापक एवं गहरी दृष्टि लिए हुई है। मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत उनकी कविताएँ ज्वलंत बौद्धिक एवं भावनात्मक प्रश्न भी खड़ी करती हैं।

4. पूर्व–कृत शोध–कार्य

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह प्रबुद्ध समीक्षक के साथ प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी कविताओं का फलक अत्यंत विस्तृत है जहाँ भारतीय जनजीवन की आवाज पूरी समर्थता के साथ अभिव्यक्त है। किन्तु, उनकी कविताओं पर अबतक विधिवत् कोई शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। यद्यपि छिट–पुट आलेखों के अतिरिक्त इन पर दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। एक, 'समय पर सवार' (डॉ0 गीता कुमारी कंधवे) तथा दूसरी संपादित पुस्तक 'क्रांतदर्शी कवि डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह' (संपादक डॉ0 राकेश रंजन) है, किन्तु इनमें कवि की समग्र चेतना को उभारा नहीं गया है। शोध की संवेदना नये विषयों की खोज के साथ वर्तमान जीवन में उसके मूल्य एवं उसकी प्रासंगिकता पर निर्भर होती है। इस दृष्टि से डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह की काव्य–चेतना शीर्षक शोध–विषय अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

5. शोध के आधार ग्रंथ/स्रोत

अध्ययन के स्रोत के अंतर्गत डॉ0 राजेश्वर प्रसाद की निम्नलिखित काव्य–पुस्तकों को आधार–ग्रंथ के रूप में लिया जा सकता है:

i आत्मा के शिल्पी, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर/दिल्ली, 2002

ii मैं भूखा हूँ, जागृति संस्थान, मुजफ्फरपुर, 2004

iii मेरा घर कहाँ है?, जागृति संस्थान, मुजफ्फरपुर, 2005

iv महासमर जारी है, जागृति संस्थान, मुजफ्फरपुर, 2006

v	तुम कहाँ हो, शांति पब्लिकेशंस, मुजफ्फरपुर, 2011

vi	कृषक वेदना, शांति पब्लिकेशंस, मुजफ्फरपुर, 2017

6. शोध की परिकल्पना

डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह की रचनाएँ सामाजिक समरसता, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं राष्ट्रीय चेतना तथा मानवीय मूल्यों से अनुप्राणित हैं। हमारा समाज एवं राष्ट्र विभिन्न समयों में विभिन्न जटिल समस्याओं से गुजरता रहा है। व्यक्ति एवं समाज का विकास सद्भावनापूर्ण वातावरण की निर्मिति तथा समग्र विश्व का कल्याण कैसे संभव है, इसका स्पष्ट स्वरूप हमें इनकी कविताओं में परिलक्षित होता है। वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के प्रभावस्वरूप सामाजिक संबंधों में आयी विघटन की स्थिति, सभ्यता की चकाचौंध, युद्ध के दुष्परिणाम तथा शाश्वत रूप से व्यक्ति की अन्तश्चेतना में विद्यमान अतृप्ति के कारण वर्तमान जीवन की दशा से कैसे निजात पायी जा सकती है, इसकी सम्यक् दृष्टि उनकी कविताओं में विद्यमान है। सुख–शांति का छिन जाना वर्तमान जीवन की जैसे नियति बनती जा रही है। तनावग्रस्त जीवन से मुक्ति का मार्ग इनकी रचनाओं के गम्भीर चिंतन, मनन एवं अध्ययन से प्रशस्त हो सकता है।

7. शोध की प्रविधि

शोध की प्रविधि विश्लेषणात्मक एवं मूल्यांकनपरक होगी। डॉ0 राजेश्वर प्रसाद की काव्यकृतियों पर लिखे गए समीक्षात्मक ग्रंथों, आलोचनात्मक निबंधों एवं पत्र–पत्रिकाओं के आलावा हिन्दी काव्य से सम्बद्ध शोध एवं समीक्षात्मक ग्रंथों, हिन्दी साहित्य का इतिहास, हिन्दी साहित्य कोश, शिल्प एवं शैली से सम्बद्ध ग्रंथों के साथ संपूर्ण क्रांति,वैश्वीकरण, युद्ध एवं शांति, कृषकों की दुर्दशा तथा जीवनी एवं आत्मकथा से सम्बद्ध पुस्तकों का सहयोग लिया जायेगा।

8. शोध– विषय के प्रस्तावित अध्याय

शोध–विषय को निम्नांकित अध्यायों में विभक्त करने का प्रस्ताव हैः–

प्रथम अध्याय डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह के काव्य की सामाजिक चेतना

तृतीय अध्याय डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह के काव्य की राजनीतिक एवं राष्ट्रीय चेतना

चतुर्थ अध्याय डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह के काव्य की आर्थिक चेतना और वैश्वीकरण

पंचम अध्याय डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह के काव्य की धार्मिक–सांस्कृतिक चेतना

षष्ठ अध्याय डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह के काव्य का शिल्प–विधान

सप्तम अध्याय उपसंहार

परिशिष्ट : 1. संदर्भ ग्रंथसूची
2. कवि डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह से साक्षात्कार

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. समय पर सवार – डॉ0 गीता कुमारी कंधवे, जागृति संस्थान, प्रकाशन प्रभाग मुजफ्फरपुर, बिहार, 2016
2. क्रांतदर्शी कवि : डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह, संपादक– राकेश रंजन, शांति पब्लिकेशंस, मुजफ्फरपुर, बिहार, 2014
3. बिहार के प्रमुख हिन्दी प्रबंधकाव्य, संपादकद्वय– डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह एवं डॉ0 दिलीप कुमार श्रीवास्तव, जागृति संस्थान, प्रकाशन प्रभाग, मुजफ्फरपुर, बिहार,2012
4. भूमिका और डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह की भूमिकाएँ– डॉ0 राकेश रंजन, जागृति संस्थान, प्रकाशन प्रभाग, मुजफ्फरपुर, बिहार 2019
5. मुजफ्फरपुर– 2001–2013 अंक, संपादक – डॉ0 राजेश्वर प्रसाद सिंह, जागृति संस्थान, मुजफ्फरपुर
6. बेनीपुरी ग्रंथावली (भाग–1 से भाग–8 तक) संपादक – सुरेश शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31 अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली– 110002, 2013
7. आधुनिक हिन्दी गद्य के तीन शैलीकार (पीएच.डी. शोध प्रबंध), शोधकर्ता– श्री चन्देश्वर प्रसाद सिंह, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, 1976
8. रामवृक्ष बेनीपुरी के साहित्य में चित्रित समाज : डॉ0 पुष्पा गुप्ता, अभिधा प्रकाशन, रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर,– 842002, 2003
9. समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र : जयप्रकाश नारायण,बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना– 16
10. स्वतंत्र भारत की झलक : डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली, 1973
11. हिन्दी साहित्य कोश, भाग– 1 : प्रधान सम्पादक– धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1985
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1978

13. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
14. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
15. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, द्वितीय खंड : डॉ0 गणपतिचन्द्र गुप्त,
16. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2009
17. भूमंडलीकरण और हिन्दी साहित्य– डॉ0 गजानन चव्हाण, शुभम पब्लिकेशन, कानपुर, 2020
18. मिथक से आधुनिकता तक– रमेश कुंतल मेघ, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली– 2021
19. हिन्दी साहित्य और गाँधीवादी चेतना– सं0 डॉ0 सुशीला गुप्ता, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा प्रकाशन, मुम्बई–2, 2000 ई0
20. हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1, प्रधान संपादक– धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1985

13.04.2024

Dr. Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

शोध निर्देशक
डॉ0 कृष्ण कुमार पासवान
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
आर.सी.एस. कॉलेज, मंझौल
बेगूसराय

राहुल कुमार

शोधार्थी
राहुल कुमार
पैट– 2021–2022
पैट क्रमांक– 22090366
पता
ग्राम– बाघी
पोस्ट– सुहिर्दनगर
थाना– नगर थाना
जिला– बेगूसराय
पिन कोड– 851218